Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:9(3), September, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

सूफ़ी काव्य : चेतन से अवचेतन तक

Dr. B. Laxmi H.O.D. of Hindi

Dr. V. S. Krishna Govt, Degree College (A) Visakhapatnam

Mail.ID – buddhalaxmidec77@gmail.com Mobile no. 9989817442

हिंदी साहित्य का मध्यकाल धार्मिक और भक्ति चेतना का युग था, जिसमें भक्ति आंदोलन के अंतर्गत सूफ़ी और निर्गुण संत काव्य धाराएं विकसित हुईं। इस युग में प्रेमाश्रयी भक्ति शाखा का एक विशिष्ट स्थान रहा, जिसमें सूफ़ी संतों की वाणी ने आध्यात्मिक प्रेम को केंद्र में रखकर मानवीय चेतना से अवचेतन की गहराइयों तक पहुँचने का प्रयास किया। सूफ़ी काव्य केवल धार्मिक उपदेश नहीं बल्कि आत्मा की गूढ़ गहराइयों की खोज है, जहाँ प्रेम माध्यम बनता है ब्रह्म से एकात्म होने का।

सूफ़ी विचारधारा की पृष्ठभूमि

सूफ़ी मत इस्लामी आध्यात्मिक परंपरा से जुड़ा हुआ है, जिसमें आंतरिक साधना, ईश्वर प्रेम और आत्मा की शुद्धि को प्राथमिकता दी जाती है। यह विचारधारा मानती है कि ईश्वर सर्वत्र व्याप्त है और आत्मा का परम उद्देश्य उस परमात्मा में विलीन होना है। सूफ़ी साधक 'ईश्वर के प्रेमी' होते हैं, जो सांसारिक बंधनों से मुक्ति पाकर 'माशूक़' (ईश्वर) में लीन होने को ही जीवन की सार्थकता मानते हैं। सूफ़ी मत की सबसे प्रमुख विशेषता है उसका प्रेम-आधारित दृष्टिकोण। यह प्रेम दैहिक नहीं, बल्कि आत्मिक होता है - 'इश्क़े हक़ीकी'। इस प्रेम की परिणति एक ऐसे अनुभव में होती है, जो व्यक्ति की चेतना को अवचेतना के धरातल पर ले जाकर अस्तित्व की गहराइयों में डुबो देता है।

प्रेमाश्रयी शाखा और सूफ़ी काव्य-

भक्ति आंदोलन के अंतर्गत हिंदी काव्य में दो प्रमुख धाराएं थीं - निर्गुण और सगुण भक्ति। निर्गुण शाखा में भी दो उपशाखाएं थीं - ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी। प्रेमाश्रयी शाखा में प्रमुख रूप से सूफ़ी कवि सम्मिलित थे, जिन्होंने प्रेम को माध्यम बनाकर आत्मा और परमात्मा की एकता का अनुभव कराया। प्रेमाश्रयी शाखा का स्वरूप विशुद्ध आध्यात्मिक था, जिसमें लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की ओर अग्रसर होने की प्रक्रिया को काव्यात्मक अभिव्यक्ति दी गई। सूफ़ी परंपरा इस्लाम की वह शाखा है जो आत्मा की शुद्धि, ईश्वर के साथ एकत्व और प्रेम के अनुभव पर बल देती है। सूफ़ी संत मानते हैं कि ईश्वर केवल किसी बाह्य मंदिर या मस्जिद में नहीं, बल्कि प्रेमी के हृदय में निवास करता है। इसी दृष्टिकोण से उनका काव्य जन्म लेता है – आत्मा और परमात्मा के मिलन की उत्कंठा से भरा हुआ। इस शाखा के कवियों में प्रमुख नाम हैं – मखदूम शेख़ बुरहानुद्दीन, मलिक मुहम्मद जायसी, कुतुबन, मंझन और उसमान।

शेख़ बुरहानुद्दीन की रचनाओं में चेतन से अवचेतन की यात्रा:

1. प्रारंभिक चेतना: ईश्वर की तलाश

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:9(3), September, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

शेख़ बुरहानुद्दीन की कविता के आरंभिक चरणों में आत्मा की प्यास और ईश्वर के लिए तड़प दिखाई देती है:

"पीया बिन नाहीं चैन"

(प्रेमी के बिना चैन नहीं है)

यहाँ 'पीया' यानी परमात्मा चेतन रूप में खोजे जा रहे हैं।

2. विरह और आत्मनिवेदन का भाव

चेतन अवस्था में कवि ईश्वर को बाहर खोजता है, और बार-बार निराश होता है। तब वह ईश्वर से कहता है:

"हर जगह तू ही तू, मैं कहाँ हूँ?"

(जब हर ओर तू है, तब मैं कहाँ हूँ?)

यहाँ चेतना से अवचेतन में प्रवेश की प्रक्रिया शुरू होती है—"मैं" मिटने लगता है।

3. अवचेतन की शुरुआत: आत्मा और परमात्मा का मिलन -

शेख़ बुरहानुद्दीन के काव्य में कई बार वह क्षण आता है जहाँ साधक अपने 'अहं' को खो बैठता है और ईश्वर में विलीन हो जाता है: **"मैं तो हूँ ही नहीं, जो है वो तू है"**

यह अवचेतन की अवस्था है, जहाँ अनुभव 'साकार' नहीं रह जाता, बल्कि 'निःशब्द' और 'अनुभूतिपरक' बन जाता है।

4. एकात्मता और निर्विकल्प स्थिति -

कई पदों में कवि इस भाव को दर्शाते हैं कि अब साधक और ईश्वर के बीच कोई अंतर नहीं बचा:

"जद मैं जाण्या खुदा नूं, तां मैं ही मैं मिट गया"

(जब मैंने ईश्वर को जाना, तब 'मैं' समाप्त हो गया)

यह सूफ़ी अवचेतन की पराकाष्ठा है—'फ़ना' की अवस्था।

काव्य में प्रतीकों द्वारा अवचेतन की अभिव्यक्ति:

शेख़ बुरहानुद्दीन प्रतीकात्मक भाषा में आत्मा की गहराइयों को व्यक्त करते हैं। कुछ प्रमुख प्रतीक:

- **पीया/माशूक़** – ईश्वर
- **साँझ/रात** – आत्मिक अंधकार
- **दीया/रोशनी** – आत्मिक बोध
- **सागर/जल** – ईश्वर का व्यापक स्वरूप

इन प्रतीकों से वह भावनाएँ प्रकट होती हैं जो अवचेतन की गहराइयों में स्थित होती हैं।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण:

अगर हम मनोविज्ञान की दृष्टि से देखें, तो शेख़ बुरहानुद्दीन का काव्य युंग (Carl Jung) के 'कॉन्सियस' और 'अनकॉन्शियस' मन की अवधारणा के अनुरूप प्रतीत होता है। चेतन मन में ईश्वर की खोज एक बौद्धिक प्रयास है, लेकिन जैसे-जैसे साधक आत्मनिरीक्षण करता है, वह 'अनकॉन्शियस' या अवचेतन मन से जुड़ जाता है, जहाँ आत्मा और परमात्मा का मिलन बिना शब्दों के अनुभव होता है।

मंझन के काव्य *मधुमालती* (1545 ई.) में चेतन से अवचेतन की भावना:

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:9(3), September, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

चेतन अवस्था - प्रेम की जागरूकता और आरंभिक भावुकता:

मधुमालती और मंझन की प्रेमगाथा प्रारंभ में **मानवीय प्रेम**, सौंदर्य, और वियोग से जुड़ी है।

"देखत रूप मधु बिन बोले, मन माया की लहर उठी।"

यह 'रूपमय प्रेम' चेतन अवस्था को अभिव्यक्त करता है, जहाँ प्रेम अभी इंद्रियबोध की सीमा में है।

स्वप्न, संकेत, और प्रतीक - अवचेतन का द्वार:

काव्य में प्रेमिका के स्वप्न में नायक का आना, चंद्र-तारों से संवाद, तथा प्रकृति के संकेत अवचेतन के **प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियाँ** हैं। मंझन ने गूढ़ सूफ़ी तत्वों को कल्पना और रूपक के सहारे अवचेतन की भाषा दी है।

"नैनन भीतर बसी छवि, जागे बिन पिया की बात।"

यह दृश्य-रूप में ईश्वर का अवचेतन अनुभव है।

अवचेतन अवस्था - आत्म विलय और पूर्ण समर्पण:

जैसे-जैसे काव्य आगे बढ़ता है, प्रेमिका का प्रेम **भौतिकता से परे** जाकर पूर्ण आत्म-समर्पण और आध्यात्मिक लय बन जाता है:

"जो कुछ है सो तू ही तू, मैं मिटि गई नयनन माहीं।"

यह सूफ़ी 'फ़ना' का क्षण है - जब साधक स्वयं को ईश्वर में समर्पित कर देता है।

सूफ़ी काव्य में चेतना का रूप

सूफ़ी काव्य चेतना की उस अवस्था को चित्रित करता है जहाँ व्यक्ति 'स्व' से 'परमस्व' की ओर यात्रा करता है। यह यात्रा बाह्य दुनिया से अंतर्जगत की ओर होती है। चेतना का यह स्तर वह है जहाँ व्यक्ति आत्मनिरीक्षण, साधना और सतत प्रेमभाव के द्वारा सत्य का अनुभव करता है। चेतना का यह स्तर बौद्धिक ज्ञान से परे होता है और अनुभूति पर आधारित होता है। उदाहरणस्वरूप, **मलिक मुहम्मद जायसी की *पद्मावत*** को लिया जा सकता है। अलौकिक सौंदर्य की प्रतीक रानी पद्मावती का वर्णन, राजा रत्नसेन की यात्रा और अंततः चेतनावस्था से ऊपर उठकर प्रेम के माध्यम से आत्मा की मुक्ति – यह सब आध्यात्मिक संकेतों का प्रतिनिधित्व करता है।

"प्रीति पिया के कारनै, देह दीन्हि बिनु लेन।
समुझि लेहु सब जाइ के, तन की तास न देन॥"

इसमें चेतना आत्मत्याग की ओर अग्रसर होती है – जहाँ प्रेमी अपने अस्तित्व को प्रेम के चरणों में समर्पित कर देता है।

अवचेतन की अभिव्यक्ति - सूफ़ी काव्य में मनोवैज्ञानिक गहराई

सूफ़ी काव्य केवल बाह्य या दर्शनिक अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि इसमें गहरी मनोवैज्ञानिक अंतर्दृष्टि भी होती है। सूफ़ी कवियों ने प्रेम की उस अवस्था को वर्णित किया है, जब व्यक्ति का 'मैं' विलीन हो जाता है और अवचेतन से संवाद स्थापित होता है। इस अवस्था में व्यक्ति कल्पना, प्रतीक और रूपकों के माध्यम से अपने अंदर के रहस्यों को खोजता है। यह ठीक वैसी ही प्रक्रिया है जैसे मनोविश्लेषण में अवचेतन की गहराई से suppressed desires या divine longing बाहर आती है।

जायसी के शब्दों में:

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:9(3), September, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

"हरिन के पाँव, पिय पग गति सोई,
बिनु देखे चित चोरि लियोई।"

यह चित्त की चुराई हुई अवस्था, अवचेतन की प्रतीकात्मक यात्रा है, जहाँ इंद्रियबोधों का नियंत्रण नहीं रहता और प्रेम का उन्माद व्यक्ति को आत्मविस्मृति की ओर ले जाता है।

प्रेम का प्रतीकवाद - लौकिक से अलौकिक की ओर

प्रेमाश्रयी सूफ़ी काव्य में प्रेम को लौकिक संबंधों की प्रतीकात्मकता से जोड़ा गया है। प्रेमिका (आत्मा) प्रेमी (परमात्मा) के वियोग में तड़पती है। यह विरहावस्था ही वह बिंदु है जहाँ चेतना अवचेतन की सीमा रेखा को छूती है। इस विरह में गूढ़ रहस्य छिपा होता है - यह आत्मा की पुकार है अपने मूल स्रोत की ओर लौटने की।

कुतुबन की कृति *मृगावती* में भी हम देखते हैं कि प्रेमी की खोज आत्मा की उस यात्रा को चित्रित करती है, जिसमें अंततः आत्मा-परमात्मा एक हो जाते हैं।

इस तरह "सूफ़ी काव्य चेतना से अवचेतना तक" की यह यात्रा केवल काव्य की एक विधा नहीं है, यह एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है। यह प्रेम, विरह, एकत्व, आत्मसमर्पण और अनंत की खोज की वह गाथा है जो चेतन और अवचेतन दोनों को स्पर्श करती है। सूफ़ी काव्य हमें उस प्रेम, शांति और आत्म-खोज की ओर ले जाता है जो स्थायी है। यह केवल धर्मों की सीमाओं को तोड़ता नहीं, बल्कि आत्मा की एकता का मार्ग भी प्रशस्त करता है। हिंदी के संत कवि से लेकर आधुनिक कवि तक, इस धारा को उन्होंने अपनाया और विस्तार दिया। सूफ़ी काव्य हमें सिखाता है –

"प्रेम ही अंतिम साधना है, और उसी में ईश्वर का वास है।"

सूफ़ी काव्य न केवल आध्यात्मिक प्रेम की अभिव्यक्ति है, बल्कि यह चेतना से अवचेतना तक की वह यात्रा है, जिसमें आत्मा स्वयं को पहचानती है और परमात्मा में विलीन होती है। प्रेमाश्रयी शाखा के कवियों ने प्रतीकात्मकता, रूपक, विरह, तन्मयता और रहस्यात्मकता के माध्यम से मानवीय चेतना की सीमाओं से परे जाकर अवचेतन के गूढ़ आयामों को उजागर किया है। इन रचनाओं में प्रेम केवल भावना नहीं, साधना है – जहाँ 'मैं' मिटता है और 'तू' का उदय होता है। सूफ़ी काव्य आधुनिक मनोविज्ञान, आध्यात्मिक साधना और साहित्यिक सौंदर्य का संगम है, जो आज भी पाठकों को चेतना से अवचेतना की ओर ले जाने की शक्ति रखता है।

संदर्भ सूची

1. **हिंदी साहित्य का इतिहास** – डॉ. रामचंद्र शुक्ल
2. **भारतीय काव्यशास्त्र और रहस्यवाद** – डॉ. नामवर सिंह
3. **जायसी का पद्मावत: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन** – डॉ. रामनिवास शर्मा
4. **मध्यकालीन हिंदी साहित्य में सूफ़ी प्रभाव** – डॉ. जगदीश गुप्त
5. ***कबीर ग्रंथावली*** — संपादक: हजारीप्रसाद द्विवेदी